www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-2* *February 2025***

गोरखनाथ मंदिर के सामाजिक, शैक्षणिक एवं चिकित्सकीय योगदान

डॉ0 विनोद कुमार

नेट, जेआरएफ, पी–एच०डी० (हिन्दी साहित्य), दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

उत्तर प्रदेश राज्य के गोरखपुर जनपद में गुरु गोरखनाथ का भव्य मंदिर स्थित है। यह मंदिर नाथ पंथ के प्रणेता महायोगी गुरु श्री गोरखनाथ के तपोभूमि के रूप में विख्यात है। नाथ पंथ का प्रचार–प्रसार करने का सर्वाधिक श्रेय इन्हीं को जाता है। गुरु श्री गोरखनाथ को भगवान शिव का अवतार भी माना जाता है। जो अजन्मा एवं अमर हैं। उनका जन्म काल और जन्मस्थली के संबंध में विद्वानों में मतैक्य नहीं है। विभिन्न विद्वानों ने उनके जन्म के संदर्भ में अपना अलग–अलग मत प्रस्तुत किया है।

गुरु गोरखनाथ के जन्म तिथि के संबंध में निश्चित जानकारी आज तक नहीं प्राप्त हो पाई है, कतिपय विद्वानों के अनुसार उनका जन्म 10वीं से 12वीं शताब्दी के मध्य हुआ था। लेकिन गुरु गोरखनाथ के जन्म के बारे में सबसे प्रसिद्ध मान्यता यह है कि उनका जन्म सिन्ध प्रांत के किसी स्थान पर हुआ था। ऐसा भी मान्यता है कि त्रेता युग में गुरु गोरखनाथ अवतरित हुए थे। जब श्री राम का राज्याभिषेक हुआ था। तब गुरु गोरखनाथ को भी आमंत्रण मिला था और वह भगवान श्री राम के मांगलकार्य में सम्मिलित हुए थे। अनेक हिंदू ग्रंथो के अनुसार द्वापर युग में गुरु गोरखनाथ का अवतार हुआ माना जाता है। उस समय गुजरात के जूनागढ़(गिरनार) गोरखमढ़ी में गुरु गोरखनाथ ने तपस्या किया था। इसी जगह श्री कृष्णा और रुक्मणी का विवाह सम्पन्न हुआ था। जिसमें गुरु गोरखनाथ भी शामिल हुए थे।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के मतानुसार–

दसवीं शताब्दी में श्री गोरखनाथ का अवतरण हुआ मानते हैं। भारत में प्रत्येक जगह पर उनके भक्तगण एवं अनुयायी आज भी उनके पदचिन्हों पर चल कर अनेक प्रकार की विद्या में निपुण हो रहें हैं। गुरु गोरखनाथ ने पूरे देश में सबसे प्रभावशाली धार्मिक और योग मार्ग आंदोलन का सूत्रपात किया। भारत के अधिकांश भाषाओं में गुरु गोरखनाथ से सम्बन्धित लेख उपलब्ध हैं। भारत के सामाजिक, शैक्षणिक और धार्मिक इतिहास में गुरु गोरखनाथ का महत्वपूर्ण स्थान है। उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जनपद में प्रतिष्ठित गोरखनाथ मंदिर महायोगी श्री गोरखनाथ की तपोभूमि के रूप में सुप्रसिद्ध है। गोरखपुर जनपद का नाम भी महायोगी गुरु श्री गोरखनाथ के ही नाम पर पड़ा। महायोगी गुरु श्री गोरखनाथ और गोरखनाथ मंदिर का नेपाल देश के साथ अटूट संबंध रहा है। यह सर्वविदित है कि नेपाल में राजवंश की ख्याति गुरु गोरखनाथ के ही आशीर्वाद से सम्भव हुआ है। आज भी नेपाल देश की रुपये पर गुरु श्री गोरखनाथ का चित्रांकन दृष्टिगोचर होता है। आज भी प्रत्येक वर्ष जनवरी माह में मकर संक्रांति के त्योहार पर नेपाल नरेश के तरफ से खिचड़ी गोरखनाथ मंदिर में चढ़ाई जाती है।

भारत की संत परम्परा में अधिकांश तपस्वियों, सन्यासियों एवं साध्वियों के प्रारंभिक जीवन पर प्रकाश नहीं पड़ता। गुरु गोरखनाथ भी इसके अपवाद नहीं है। यद्यपि की नाथ पंथ परंपरा गोरक्षनाथ को अजन्मा और अमर मानती है।

गोरखनाथ मंदिर की परंपरा में दायरा–

गोरखनाथ मंदिर की परंपरा में 'दायरा' एक महत्वपूर्ण और विशिष्ट सांस्कृतिक पहलू है। यह गोरखनाथ परम्परा के अनुयायियों द्वारा आयोजित किया जाता है, जो नाथ पंथ से जुड़े होते हैं। 'दायरा' का मतलब होता है एक प्रकार का भव्य उत्सव या आयोजन, जिसमें भक्तजन एवं साधु संत एक साथ मिलकर धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में प्रतिभाग करते हैं।

महायोगी श्री गोरखनाथ मंदिर के दायरे में विशेष रूप से भव्य भजन, कीर्तन, साधन और गुरु वचनों की चर्चा होती है। यह आयोजन गोरखनाथ के अनुयायियों को एकजुट करता है और उन्हें भक्ति के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते है। इसमें साधु–संत अपनी साधना और ध्यान की विधियों का पालन करते हैं ,जिससे उनके मन मस्तिष्क में आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार होता है।

दायरा की विशेषताएं–

1. गोरखनाथ मंदिर में 'दायरा' परंपरा के भीतर भजन,कीर्तन और नाथ पंथ के धार्मिक गीत गाए जाते हैं। यह एक प्रकार का सामूहिक भक्ति आयोजन होता है, जहां भक्तगण और साधु संत एकत्र होकर भक्ति साधना और ध्यान के माध्यम से गुरु गोरखनाथ की पूजा–अर्चना, भजन, कीर्तन करते हैं।
2. साधु–संत और नाथपंथी भक्त एक साथ मिलकर एक समूह में साधना करते हैं तथा गुरु गोरखनाथ की प्रति श्रद्धा और भक्ति को प्रस्तुत करते हैं।
3. दायरा परंपरा धार्मिक एकता और समुदाय की भावनाओं को बढ़ावा देता है।जिससे सभी लोग एकत्र होकर एक ही उद्देश्य के लिए काम करते हैं अर्थात गुरु गोरखनाथ की पूजा और साधना में लीन रहते हैं।

इस प्रकार गुरु गोरखनाथ मंदिर की परंपरा का दायरा न केवल धार्मिक साधना का एक अवसर है, अपितु यह एक सांस्कृतिक और सामूहिक अनुभव भी प्रदान करता है, जो भक्तों और संतों को श्री गोरखनाथ के उपदेशों और मार्गदर्शन से जोड़ता है।

सामाजिक सेवाएं–

गुरु गोरखनाथ मंदिर न केवल धार्मिक केंद्र है,अपितु यह सामाजिक सरोकारों के क्षेत्र में भी अहम भूमिका निभाता है। यहां के अनुयायी और संत समाज स्थानीय और सामाजिक उत्थान के लिए कई प्रकार के कार्य में संलग्न रहते हैं। आज भी गुरु गोरखनाथ मंदिर के महंत ही गोरखनाथ मंदिर के उत्तराधिकारी होते हैं । नाथ पंथ एवं गोरखनाथ मंदिर का संचालन गोरखनाथ मंदिर के पीठाधीश्वर के रूप उनके उत्तराधिकारी ही करते हैं। मंदिर के उत्तराधिकारी नाथपंथी परंपरा के अनुरूप मानव दुरूख के पूर्ण रक्षा प्रदान हेतु सदैव संवेदनशील एवं सजग रहते हैं

नाथपंथियों एवं गुरु गोरखनाथ मंदिर के महन्तों द्वारा जन जागरण अभियान अनवरत चलता रहता है। भक्ति आंदोलन को प्रभावित करने के लिए आजादी के संघर्षों में नाथ पंथियों का भी विशेष योगदान रहा है।

बुनियादी शिक्षा, उच्च शिक्षा, चिकित्सा शिक्षा एवं चिकित्सकीय के क्षेत्र में योगदान–

गोरखनाथ मंदिर ने हमेशा शिक्षा के प्रचार–प्रसार पर पुरजोर बल दिया है। यहां के संत, साधु एवं महन्तों ने शिक्षा के महत्व को समझते हुए भारत में कई जगहों पर स्कूलों और शिक्षण संस्थानों की स्थापना की है। गोरखनाथ मंदिर से जुड़े शिक्षण संस्थानों ने गरीब और वंचित वर्ग के बच्चों को रोजगारपरक शिक्षा देने का कार्य किया है, जिससे उन्हें बेहतर जीवन जीने का अवसर मिल सके।

आजादी की लड़ाई के समय ही अनेक महापुरुषों द्वारा शिक्षा शिक्षा के महत्व को समझते हुए अनेक शिक्षण संस्थानों का शुभारंभ कर दिया था। जिसके कड़ी में सन् उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले में सन् 1916 ई. में मदन मोहन मालवीय द्वारा काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी की आधारशिला रखी गई थी। कुछ समय पश्चात् गोरखपुर में सन् 1932 ई. में 'महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्'की स्थापना की गई। भारत के स्वतंत्रता के समय ही विभिन्न क्षेत्रों में बेसिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक के अनेक प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों की नींव पड़ गई थी।

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर की स्थापना के पूर्व सेण्ट एण्डयूज डिग्री कॉलेज गोरखपुर के अलावा कतिपय अन्य शिक्षण संस्थान भी गोरखपुर में खुल गए थे, जिसमें महाराणा प्रताप

महाविद्यालय गोरखपुर (स्थापना वर्ष 1946 ईस्वी) एवं महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय गोरखपुर (स्थापना वर्ष 1946 ईस्वी) है। दोनों उच्च शिक्षण संस्थानों का संचालन एवं नियन्त्रण गोरखनाथ मंदिर द्वारा ही किया जाता है। गोरखपुर के महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद द्वारा आज भी भिन्न–भिन्न शिक्षण केंद्रों सहित बेसिक से लेकर उच्च शिक्षा संस्थाएं संचालित कराया जा रहा है। जिसमें विभिन्न पाठ्यक्रमों के प्रशिक्षण के साथ–साथ शिक्षण, तकनीकी, संस्कृत महाविद्यालय, बीएससी नर्सिंग जैसे शिक्षण संस्थान एवं अनेक प्रकार के चिकित्सालय सम्मिलित हैं। इसी क्रम में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा 'महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर' की स्थापना भी हो गया है। इस प्रकार से हम यह कह सकते हैं कि 'महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्' गोरखपुर ने शिक्षा के क्षेत्र में अद्वितीय सेवाएं दे रहा है।

गोरखनाथ मंदिर ने चिकित्सा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। मंदिर न केवल एक धार्मिक स्थल है, अपितु यहां योग, आयुर्वेद एवं पारंपरिक चिकित्सा पद्धति के माध्यम से स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने में अपनी महती भूमिका निभाता है। इस मंदिर के द्वारा विभिन्न अस्पतालों और चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया जाता है। जहां निरूशुल्क चिकित्सा सेवाएं,भोजन और जरुरी सामग्री प्रदान की जाती है। गोरखनाथ मंदिर के कई कार्यक्रमों में मरीजों के लिए निरूशुल्क उपचार, स्वास्थ्य सम्बन्धी विभिन्न जांच, विभिन्न औषधियां एवं ज़रूरी उपकरण वितरित किया जाता है।

गोरखनाथ मंदिर द्वारा संचालित वर्ष 2003 में गुरु श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय की स्थापना हुई। गोरखपुर का यह चिकित्सालय स्वास्थ्य सेवाओं का प्रमुख केंद्र है। यह अस्पताल समाज के समस्त वर्गों को उच्च गुणवत्ता वाली चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध करने के लिए समर्पित है। विशेष रूप से यह अस्पताल गरीबों और जरूरतमंद लोगों के लिए वरदान साबित हो रहा है। क्योंकि यहां अल्प खर्चों में प्रभावी चिकित्सा सेवाएं प्रदान की जाती है। इस अस्पताल की स्थापना का मुख्य उद्देश्य गरीबों एवं जरूरतमंद लोगों को उच्च गुणवत्ता की स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना है।

गुरु गोरखनाथ चिकित्सालय में सुदूर क्षेत्रों से लोग चिकित्सकीय सेवाएं प्राप्त करने हेतु आते हैं। विशेष रूप से पूर्वी उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बिहार एवं नेपाल क्षेत्र की गरीब जनता इस चिकित्सालय में स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ ले रहे है। यहां पर कई प्रकार के विशेषज्ञ डॉक्टरों द्वारा समुचित इलाज किया जाता है। जिनमें जनरल चिकित्सा,प्रसूति,सर्जरी, शिशु रोग, बाल रोग, स्त्री रोग,मानसिक रोग,हड्डी रोग, हृदय रोग इत्यादि सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त अस्पताल में रोगियों की चिकित्सा जांच, लैब जांच,अल्ट्रासाउंड, एक्स–रे जैसी उच्च कोटि की सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जाती है।

गुरु गोरखनाथ चिकित्सालय समय–समय पर स्वास्थ्य शिविरों का बड़ा आयोजन भी करता है। जिसमें मुख्यतः निरूशुल्क चिकित्सा जांच, टीकाकरण, दवाइयां और स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान की जाती है। यह शिविर ग्रामीण इलाकों में आयोजित होते हैं। जिससे उन क्षेत्रों के लोग लाभान्वित होते हैं, जहां स्वास्थ्य सुविधाएं सुगमता से नहीं प्राप्त हो पाता है। इसके अलावा चिकित्सालय में जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन भी किया जाता है, जिनमें लोगों को स्वच्छता,पोषण रोगों की रोकथाम निरोग जीवन शैली से संबंधित संपूर्ण जानकारी दी जाती है। वर्तमान में यह चिकित्सालय अन्य चिकित्सकीय संस्थानों के लिए प्रेरणा स्रोत बना हुआ है।

गुरु गोरखनाथ इंस्टीच्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस(ळळप्डै) गोरखपुर में एक प्रमुख चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान केंद्र है। यह संस्थान चिकित्सा शिक्षा, प्रशिक्षण एवं स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में अपने उत्कृष्ट कार्य के लिए जाना जाता है। गुरु गोरखनाथ इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेस की स्थापना गुरु गोरखनाथ मंदिर ट्रस्ट के अंतर्गत हुई थी। जिसका मूल उद्देश्य समाज के लिए गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना था। संस्थान का लक्ष्य प्रशिक्षित डॉक्टर और स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की एक नई पीढ़ी की एक नई टीम तैयार करना है, जो समाज में स्वास्थ्य क्षेत्र के सुधार में अपनी मेधा को सत्कार्य में लगा सके। यह संस्थान चिकित्सा शिक्षा, उच्च शिक्षा,चिकित्सा शोध और समर्पित सेवाओं का एक संगठित केंद्र है।

गुरु गोरखनाथ स्कूल आफ नर्सिंग,गोरखपुर का एक प्रमुख नर्सिंग शिक्षण संस्थान है। जिसमें विभिन्न पाठ्यक्रमों का संचालन होता है।जिनमें मुख्य रूप से ळछड, ।छड और ठै.ब. नर्सिंग शामिल है।यह स्कूल भी गुरु गोरखनाथ मंदिर ट्रस्ट द्वारा संचालित होता है।

मंदिर परिसर में पुस्तकालय की स्थापना और उद्देश्य–

गुरु गोरखनाथ मंदिर परिसर में एक भव्य पुस्तकालय की स्थापना हुई है। इसका उद्देश्य धार्मिक सांस्कृतिक और बौद्धिक जागरूकता फैलाना है। इस पुस्तकालय का मुख्य उद्देश्य न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक ग्रन्थों का संग्रह करना था,बल्कि सामाजिक, साहित्यिक और शैक्षिक संदर्भों में भी पुस्तकें उपलब्ध कराना है।

इस समृद्ध पुस्तकालय में भगवद गीता,रामायण, महाभारत, उपनिषद, वेद पुराण, नाथ पंथ से संबंधित अनेक पांडुलिपियां, भारतीय संस्कृति, मंदिर से प्रकाशित 'योगवाणी', परंपराओं, इतिहास और समाजशास्त्र पर आधारित पुस्तकें भी उपलब्ध है।

गुरु गोरखनाथ मंदिर परिसर में जनता दरबाररू एक उत्कृष्ट सामाजिक सेवा मंच–

गोरखनाथ मंदिर सामाजिक सेवा के क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण पहलुओं को बढ़ावा देता है। इन पहलुओं में से एक परिणामकरी आयोजन "जनता दरबार" भी है। जो गोरखनाथ मंदिर द्वारा आयोजित किया जाता है। वर्तमान में उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री माननीय योगी आदित्यनाथ महाराज जी के कुशल नेतृत्व में 'जनता दरबार' का आयोजन मंदिर परिसर के में होता जाता है। जब वह गोरखपुर महानगर में प्रवास करते हैं,तब प्रत्येक दिन प्रातः 8रू30 बजे से 9रू00 बजे तक मंदिर परिसर के अपने कार्यालय में बैठते हैं। इस दौरान वह लोगों से मुलाकात कर उनकी समस्याओं को सुनते हैं और उच्च अधिकारियों को त्वरित कार्यवाही करने हेतु निर्देश देते हैं। यहां वह प्रत्येक आने वाले की समस्याओं को गम्भीरता से सुनते हैं। सुदूर क्षेत्रों से भी भिन्न–भिन्न विवादों और समस्याओं से सम्बन्धित आवेदन के साथ लोग जाते हैं। जिसका समाधान उनके द्वारा अभिलंब कर दिया जाता है। मंदिर परिसर के महंत 'दिग्विजयनाथ स्मृति भवन' के बाहर कुर्सियों पर बैठाए लोगों तक माननीय मुख्यमंत्री जी स्वयं पहुंचते हैं।

इस प्रकार यह प्रतिष्ठित मंदिर भारत में राष्ट्रीयता और मानवीय एकता का प्रतीक बना हुआ है। यहां विभिन्न समुदायों के लोग एकजुट होकर सांप्रदायिक सद्भावना को बढ़ावा देते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ –

1. गोरखनाथ मंदिर– इतिहास और महत्व, श्री बृजनाथ कौर, गोरखपुर प्रकाशन, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश।
2. नाथ पंथ और गोरक्षपीठ, डॉ० इंदीवर,वी०एल० मीडिया साल्यूंसस,2023
3. गोरखबानी, रामलाल श्रीवास्तव, गोरखनाथ मंदिर, गोरखपुर।
4. नाथ संप्रदाय, हजारी प्रसाद द्विवेदी,लोगभारतीय प्रकाशन, प्रयागराज।
5. भारतीय दर्शन, मिश्रा चन्द्र जगदीश,चौखम्भा सूर, भारती प्रकाशन,वाराणसी।
6. गोरखनाथ और उनका योग, वर्मा, लाल,किशोरी, शारदाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
7. योगी आदित्यनाथ– मुख्यमंत्री के रूप में उनका उदय", पाटिल,चंद्रकांत, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
8. "योगी आदित्यनाथ– संत, नेता और मुख्यमंत्री", श्रीवास्तव, नवीन, राजकमल प्रकाशन,दिल्ली।

Cite this Article-

डॉ0 विनोद कुमार, "गोरखनाथ मंदिर के सामाजिक, शैक्षणिक एवं चिकित्सकीय योगदान", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:02, February 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/
DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i2002
Published Date- 04 February 2025